

झांकी रे झरोखे बैठी लाडली जनक की भजन लिरिक्स



झांकी रे झरोखे बैठी,
लाडली जनक की।bd।

राजा अनेक आए,
एक से एक आए,
अब विचारे देखो,
धनुष तोड़न की,
झांकी रे झरोखे बैठी,
लाडली जनक की।bd।

चार जनी आगे पीछे,
पुष्प माला हाथ लेके,
बीच में समाए बैठे,
छोटे से रामजी,
झांकी रे झरोखे बैठी,
लाडली जनक की।bd।

सीता जी अर्ज हमारी,
जनक लली रहेगी ख्वारी,
अब छोड़ो ना पिताजी,
हठ धनुष तोड़न की,
झांकी रे झरोखे बैठी,
लाडली जनक की।bd।

कहते हैं तुलसी दास,
राम और लक्ष्मण साथ,
तोड़ेंगे धनुष जैसे,
लकड़ी इंधन की,
झांकी रे झरोखे बैठी,
लाडली जनक की।bd।

लाडली जनक की Ibd।



Upload By – Manoj Kumar
9785854944

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल
एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करें। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>